5CPSLY

पाठ 3

विद्रोही शक्तिसिंह

-श्री विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक'

दो ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से कहानीकार ने भाई–भाई के संबंधों के प्रेम, प्रतिशोध, अन्तर्द्वन्द्व, ग्लानि भाव और भावनाओं के आवेग को कुशलता के साथ चित्रित किया है। एक छोटे से मुद्दे पर महाराणा प्रताप और शक्ति सिंह में मतभेद होता है। अपमान से आहत और प्रतिशोध भाव से भरा हुआ शक्ति सिंह क्रोध के आवेग में चित्तौड़ छोड़कर आगरा अकबर के शरण में चला जाता है। उसके मन में महाराणा प्रताप से बदला लेने की बलवती आकांक्षा है। मुगल और राजपूतों के मध्य युद्ध में शक्ति, अकबर की ओर से लड़ रहा होता है। राजपूतों की पराजय के मध्य जब महाराणा सेनानायकों के दबाव में युद्ध के मैदान से सकुशल निकल जाने को बाध्य किये जाते हैं तो शक्ति सिंह इस रणनीति को ताड़ लेता है और बदला लेने का उपयुक्त अवसर समझ अपने घोड़े को महाराणा के पीछे लगा देता है। रास्ते में वीर राजपूत योद्धाओं के मातृभूमि पर बलिदान और उत्सर्ग देखकर शक्ति सिंह का हिंसा भाव ग्लानि से भर उठता है। महाराणा के समक्ष नतमस्तक हो बच्चों की तरह फूट–फूट कर रोता हुआ वीर शक्ति, भाई के चरणों में अपना शीश चढ़ाकर प्रायश्चित्त करने का आदेश माँगता है। इस कहानी का एक और सबल पक्ष है शक्ति सिंह की पत्नी की भावनाओं की जीत।

"मान जाओ, तुम्हारे उपयुक्त यह कार्य न होगा।"

"चुप रहो, तुम क्या जानो?"

"इसमें वीरता नहीं, अन्याय है।"

"बहुत दिनों की धधकती हुई ज्वाला आज शान्त होगी–" शक्तिसिंह ने एक लम्बी साँस फेंकी और अपनी पत्नी की ओर देखा।

"छी–छी, कलंक लगेगा, अपराध होगा।"

"अपमान का बदला लूँगा। प्रताप के गर्व को मिट्टी में मिला दूँगा। आज मैं विजयी होऊँगा–" बड़ी दृढ़ता से कहकर शक्तिसिंह ने शिविर के द्वार पर से देखा। मुगल–सेना के चतुर सिपाही अपने–अपने घोड़ों की परीक्षा ले रहे थे। धूल उड़ रही थी। बड़े साहस से सब एक–दूसरे में उत्साह भर रहे थे।

"निश्चय ही महाराणा की हार होगी। बाईस हजार राजपूतों को दिन–भर में मेरे द्वारा बुलाई गई मुगल सेना काटकर सूखे डंठल की भाँति गिरा देगी" – साहस से शक्तिसिंह ने कहा।

"भाई पर क्रोध करके देशद्रोही बनोगे ....." कहते–कहते उस राजपूत बाला की आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं।

शक्तिसिंह अपराधी की तरह विचार करने लगा। जलन का उन्माद नस–नस में दौड़ रहा था। प्रताप के प्राण लेकर ही छोड़ूँगा, ऐसी प्रतिज्ञा उसने की थी। नादान दिल किसी तरह न मानेगा। उसे कौन समझा सकता था ?

रणभेरी बजी। कोलाहल मचा। मुगल सैनिक मैदान में एकत्रित होने लगे। पत्ता–पत्ता खड़खड़ा उठा।

बिजली की भाँति तलवारें चमक रही थीं। उस दिन सबमें उत्साह था। युद्ध के लिए भुजाएँ फड़कने लगीं।

शक्तिसिंह ने घोड़े की लगाम पकड़कर कहा– "आज अंतिम निर्णय है, मरूँगा या मारकर ही लौटूँगा।"

शिविर के द्वार पर खड़ी मोहिनी अपने भविष्य की कल्पना कर रही थी। उसने बड़ी गंभीरता से कहा – "ईश्वर आपको सद्बुद्धि दे, यही प्रार्थना है।"

एक महत्त्वपूर्ण अभियान के विध्वंस की तैयारी थी। प्रकृति काँप उठी। घोड़े और हाथियों के चीत्कार से आकाश थरथरा उठा। बरसाती हवा के थपेड़ों से जंगलों के वृक्ष रणनाद करते हुए झूम रहे थे। पशु–पक्षी भय से त्रस्त होकर आश्रय ढूँढने लगे। बड़ा प्रतिकूल और विकट समय था।

उस भयानक मैदान में राजपूतसेना मोर्चाबंदी कर रही थी। हल्दीघाटी की ऊँची चोटियों पर भील लोग धनुष चढ़ाए उन्मत्त खड़े थे।

"महाराणा की जय !" शैलमाला से टकराती हुई ध्वनि मुगल–सेनाओं में घुस पड़ी। युद्ध आरंभ हुआ। भैरवी रणचंडी ने प्रलय का राग छेड़ा। मनुष्य हिंसक जंतुओं की भाँति, अपने–अपने लक्ष्य पर टूट पड़े। सैनिकों के निडर घोड़े हवा में उड़ने लगे।

तलवारें चमकने लगीं। पर्वतों के शिखरों पर से विषैले बाण मुगलसेना पर बरसने लगे। सूखी हल्दीघाटी में रक्त की धारा बहने लगी।

महाराणा आगे बढ़े। शत्रुसेना का व्यूह टूटकर तितर–बितर हो गया। दोनों ओर के सैनिक कट–कटकर गिरने लगे। देखते–देखते लाशों के ढेर लग गए।

भूरे बादलों को लेकर आँधी आई। सलीम के सैनिकों को बचने का अवसर मिला। मुगलों की सेना में नया उत्साह भर गया। तोप के गोले उथल–पुथल करने लगे। धाँय–धाँय करती बंदूकों से निकली हुई गोलियाँ दौड़ रही थीं। ओह ! जीवन कितना सस्ता हो गया था।

महाराणा शत्रुसेना में सिंह की भाँति उन्मत्त होकर घूम रहे थे। जान की बाजी लगी थी।

वे सब तरफ से घिरे थे; हमला–पर–हमला हो रहा था। राणा संकट में पड़े थे। बचना कठिन था। सात बार घायल होने पर भी पैर उखड़े नहीं, मेवाड़ का सौभाग्य इतना दुर्बल नहीं था।

मानसिंह की कुमंत्रणा सत्य सिद्ध होनेवाली थी। ऐसे आपत्तिकाल में वह वीर सरदार सेना सहित वहाँ कैसे आया ? आश्चर्य से महाराणा ने उसकी ओर देखा और मन्ना जी ने उनके मस्तक से मेवाड़ के राजचिह्न को उतारकर स्वयं धारण कर लिया। राणा ने आश्चर्य और क्रोध से पूछा–"अरे! यह क्या?"

"आज मरने के समय एक बार राजचिह्न धारण करने की बड़ी इच्छा हुई है–" हँसकर मन्ना जी ने कहा। राणा ने उसकी उन्मादपूर्ण हँसी में अटल धैर्य देखा।

मुगलों की सेना में से शक्तिसिंह इस चातुरी को समझ गया। उसने देखा, घायल प्रताप रणक्षेत्र से जीते–जागते निकले चले जा रहे हैं और वीर मन्ना जी को प्रताप समझकर मुगल उधर ही टूट पड़े हैं। उसी समय दो मुगल सरदारों के साथ महाराणा के पीछे–पीछे शक्तिसिंह ने अपना घोड़ा छोड़ दिया।

खेल समाप्त हो रहा था। स्वतंत्रता की बलि–वेदी पर सन्नाटा छा गया था। जन्मभूमि के चरणों पर मर मिटनेवाले वीरों ने अपने को उत्सर्ग कर दिया था। बाईस हजार राजपूत वीरों में से केवल आठ हजार बच गए थे।

विद्रोही शक्तिसिंह चुपचाप सोचता हुआ अपने घोड़े पर चढ़ा चला जा रहा था। मार्ग में शव कटे पड़े थे – कहीं भुजा शरीर से अलग पड़ी थी; कहीं धड़ कटा हुआ था; कहीं खून से लथपथ मस्तक भूमि पर गिरा हुआ था। कैसा परिवर्तन है ! दो घड़ियों में हँसते–बोलते और लड़ते हुए जीवित पुतले कहाँ चले गए? ओह! ऐसे निरीह जीवन पर इतना गर्व !

शक्तिसिंह की आँखें ग्लानि से छलछला गईं। "ये सब भी राजपूत थे। मेरी ही जाति के खून थे। हाय रे मैं ! मेरा प्रतिशोध पूरा हुआ–क्या सचमुच पूरा हुआ ? नहीं, यह प्रतिशोध नहीं, अधम शक्ति ! यह तेरे चिरकाल के लिए पैशाचिक आयोजन था। तू भला पागल, तू प्रताप से बदला लेना चाहता था। उस प्रताप से जो अपनी स्वर्गादपि गरीयसी जननी जन्मभूमि की मर्यादा बचानेवाला था; वह जन्मभूमि, जिसके अन्न–जल से तेरी नसें भी फूली–फली हैं। अब भी माँ की मर्यादा का ध्यान कर।"

सहसा धाँय–धाँय गोलियों का शब्द हुआ। चौंककर शक्तिसिंह ने देखा। दोनों मुगल प्रताप का पीछा कर रहे थे। महाराणा का घोड़ा लस्त–पस्त होकर झूमता हुआ गिर रहा था। अब भी समय है। शक्तिसिंह के हृदय में भाई की ममता उमड़ पड़ी।

फिर एक आवाज़ हुई – "रुको।"

दूसरे क्षण शक्तिसिंह की बन्दूक छूटी। पलक मारते दोनों मुगल सरदार जहाँ–के–तहाँ ढेर हो गए। महाराणा ने क्रोध से आँखें चढ़ाकर देखा। वे आँखें पूछ रही थीं, "क्या मेरे प्राण पाकर निहाल हो जाओगे ? इतने राजपूतों के खून से भी तुम्हारी हिंसा तृप्त नहीं हुई ?"

किन्तु यह क्या ? शक्तिसिंह तो महाराणा के सामने नतमस्तक खड़ा था। वह बच्चों की तरह फूट–फूटकर रो रहा था। शक्तिसिंह ने कहा–"नाथ! सेवक अज्ञान में भूल गया था। आज्ञा हो तो इन चरणों पर अपना शीश चढ़ाकर प्रायश्चित कर लूँ।"

राणा ने अपनी दोनों बाँहें फैला दीं। दोनों के गले आपस में मिल गए, दोनों की आँखें स्नेह की वर्षा करने लगीं। दोनों के हृदय गद्‌गद् हो गए।

इस शुभ मुहूर्त पर पहाड़ी वृक्षों ने पुष्पवर्षा की, नदी की कल–कल धारा ने वंदना की।

प्रताप ने उन डबडबाई हुई आँखों से ही देखा–उनका चिर सहचर प्यारा 'चेतक' दम तोड़ रहा है। सामने ही शक्तिसिंह का घोड़ा तैयार है।

शक्तिसिंह ने कहा–"भैया ! अब आप विलंब न करें, घोड़ा तैयार है।"

राणा शक्तिसिंह के घोड़े पर सवार होकर, उस दुर्गम मार्ग को पार करते हुए निकल गए। श्रावण का महीना था।

दिनभर की मारकाट के पश्चात् रात्रि बड़ी सुनसान हो गई थी। शिविरों में से महिलाओं के रुदन की करुण ध्वनि हृदय को हिला देती थी।

हजारों सुहागिनों के सुहाग उजड़ गए थे। उन्हें कोई ढाढ़स बँधानेवाला न था। था तो केवल हाहाकार, चीत्कार, कष्टों का अम्बार। शक्तिसिंह अभी तक अपने शिविर में नहीं लौटा था। उसकी पत्नी भी प्रतीक्षा में विकल थी। उसके हृदय में जीवन की आशा–निराशा क्षण–क्षण उठती–गिरती थी।

अँधेरी रात में काले बादल आकाश में छा गए थे। एकाएक उस शिविर में शक्तिसिंह ने प्रवेश किया। उसके कपड़े खून से तर थे। पत्नी ने कौतूहल से देखा।

"प्रिये !"

"नाथ !"

"तुम्हारी मनोकामना पूर्ण हुई, मैं प्रताप के सामने परास्त हो गया।"

अभ्यास

पाठ से

1. शक्ति सिंह कौन था उसने क्या प्रतिज्ञा की थी ?
2. राजपूत बाला की आँखों से चिंगारियाँ क्यों निकलने लगी ?
3. महाराणा प्रताप से शक्ति सिंह की अनबन क्यों हुई ?
4. शक्ति सिंह का अंतिम निर्णय क्या था ?
5. मानसिंह की कुमंत्रणा क्या थी ?
6. मन्ना जी ने मेवाड़ का राज चिह्न अपने मस्तक पर क्यों धारण किया ?
7. शक्ति सिंह की आँखें ग्लानि से क्यों छलछला गईं ?
8. युद्ध अथवा उस मारकाट के क्या परिणाम हुए ?

पाठ से आगे

1. पाठ में महाराणा प्रताप और शक्ति सिंह दो चरित्र हैं। दोनों को पढ़ते हुए कौन सा चरित्र आपको अधिक आकर्षित करता है ? विचार कर लिखिए।
2. अगर शक्ति सिंह ने महाराणा प्रताप का पीछा न किया होता तो उसका क्या परिणाम होता? साथियों के साथ विचारकर लिखिए।

5CYNNL

3. शक्ति सिंह की पत्नी मोहिनी के भाव को समझते हुए उसकी चारित्रिक विशेषताओं को परस्पर बातचीत कर लिखिए।
4. दो भाइयों के संबंधों को हम कहानी में देखते हैं। हमारे आस–पास के परिवेश में भाई–भाई के संबंधों को देखकर आप क्या महसूस करते हैं ? आपस में बात कर लिखिए।

भाषा से

1. पाठ में आए हुए निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–

5D8JQ9

क. शक्ति सिंह ने एक लम्बी साँस फेंकी **और** अपनी स्त्री की ओर देखा।

ख. शक्ति सिंह के हृदय में भाई की ममता उमड़ पड़ी, **फिर** एक आवाज आई– रुको।

उपरोक्त दोनों वाक्यों में क्रमशः 'और' एवं 'फिर' अव्यय शब्दों से दो वाक्यों को जोड़ा गया है। इन्हें हम समुच्चय बोधक अव्यय कहते हैं। दो शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को जोड़ने का कार्य करने वाले अव्यय, समुच्चयबोधक अव्यय कहे जाते हैं। आप समुच्चय बोधक अव्यय के पाँच उदाहरण बनाएँ।

2. पाठ में इन शब्दों के प्रयोग को आप देख सकते हैं –भूरे बादल, उन्मादपूर्ण हँसी, अटल धैर्य, नया उत्साह, विकट समय, सस्ता जीवन, प्रलय राग। ऐसे प्रयोग विशेषण–विशेष्य के उदाहरण हैं। पाठ से आप इसी प्रकार के अन्य उदाहरण को खोज कर लिखिए और विशेष्य तथा विशेषण को चिह्नित कीजिए।

3. पाठ में बहुत से स्थानों पर योजक चिह्न (–) का प्रयोग किया गया है। पाठ से इन्हें खोजकर लिखिए और योजक चिह्न का प्रयोग कहाँ होता है, इसे किताब में से ढूँढ़ कर पढ़िए और शिक्षक की मदद से समझने का प्रयास कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. हल्दीघाटी कहाँ पर है और क्यों प्रसिद्ध है ? शिक्षक से बातचीत कर इस विषय पर एक निबंध लिखिए।

2. इस कहानी को एक छोटे से नाटक के रूप में परिणित कर उसका मंचन कीजिए।

●●●